ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 2, March 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

स्थापत्य कला की दृष्टि से राजस्थान की प्रमुख हवेलियां

Pukhraj

Assistant Professor, Dept. of History, Govt. College, Pipar City, Jodhpur, Rajasthan, India

सार

राजस्थान घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों पर्यटकों के लिए भारत में सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है। राजस्थान अपने ऐतिहासिक हवेलियां कला और संस्कृति के लिए अपने नारे "पधारो म्हारे देश (मेरी भूमि में आपका स्वागत है)" के साथ पर्यटकों को आकर्षित करता है। [1] जयपुर , जिसे गुलाबी शहर के रूप में भी जाना जाता है, राजधानी होने के कारण एक बहुत लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। राजस्थान का और स्वर्ण त्रिभुज का एक भाग । जयपुर का चारदीवारी वाला शहर एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है [2] और अहमदाबाद के बाद मान्यता प्राप्त होने वाला यह दूसरा भारतीय शहर है ।जयपुर के महल , उदयपुर की झीलें, और जोधपुर , बीकानेर और जैसलमेर के रेगिस्तानी किले कई भारतीय और विदेशी पर्यटकों के सबसे पसंदीदा स्थलों में से हैं। राज्य के घरेलू उत्पाद में पर्यटन का हिस्सा लगभग 15% है। स्थापत्य कला की दृष्टि से राजस्थान की प्रमुख हवेलियां के बारे में बताया जा रहा है.

परिचय

1. जैसलमेर की हवेलियाँ

- पटुओं के हवेली: 18 वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में जैसलमेर के एक व्यवसायी गुमानाचंद पटुआ के 5 पुत्रो ने इस हवेली का निर्माण करवाया था । छियासठ झरोखों से युक्त ये हवेलियाँ निसंदेह कला का सर्वेतम उदाहरण है। ये कुल मिलाकर पाँच हैं, जो कि एक-दूसरे से सटी हुई हैं। ये हवेलियाँ भूमि से 8-10 फीट ऊँचे चबूतरे पर बनी हुई है व जमीन से ऊपर छः मंजिल है व भूमि के अंदर एक मंजिल होने से कुल 7 मंजिली हैं। पाँचों हवेलियों के अग्रभाग बारीक नक्काशी व विविध प्रकार की कलाकृतियाँ युक्त खिड़कियों, छज्जों व रेलिंग से अलंकृत है। जिसके कारण ये हवेलियाँ अत्यंत भव्य व कलात्मक दृष्टि से अत्यंत सुंदर व सुरम्य लगती है।[1,2,3]
- नथमलजी की हवेली : जैसलमेर राज्य के दीवन मेहता नाथमल ने इसका निर्माण 1884-85 में करवाया था
- यह हवेली पाँच मंजिली पीले पत्थर से निर्मित है। हवेली में सुक्ष्म खुदाई मेहराबों से युक्त खिड़कियों, घुमावदार खिड़कियाँ तथा हवेली के अग्रभाग में की गई पत्थर की नक्काशी पत्थर के काम की दृष्टि से अनुपम है। इस अनुपम काया कृति के निर्माणकर्त्ता हाथी व लालू उपनाम के दो मुस्लिम कारीगर थे।
- सालिमसिंह की हवेली – जैसलमेर राज्य के प्रधानमंत्री सालिमसिंह मेहता ने 18 वीं शताब्दी में इस हवेली का निर्माण करवाया था . इस हवेली को "मोती" महल भी कहते है. जहाजनुमा इस विशाल भवन आकर्षक खिड़कियाँ, झरोखे तथा द्वार हैं। नक्काशी यहाँ के शिल्पियों की कलाप्रियता का खुला प्रदर्शन है। इस हवेली का निर्माण दीवान सालिम सिंह द्वारा करवाया गया, जो एक प्रभावशाली व्यक्ति था और उसका राज्य की अर्थव्यवस्था पर पूर्ण नियंत्रण था।

2. बीकानेर की हवेलियाँ

- बीकानेर की प्रसिद्ध 'बच्छावतों की हवेली' का निर्माण सोलहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में कर्णसिंह बच्छावत ने करवाया था।
- इसके अतिरिक्त बीकानेर में रामपुरिया हवेली, कोठारी हवेली, मोहता हवेलीड़ा आदि की हवेलियाँ अपने शिल्प वैभव के कारण विख्यात है।
- बीकानेर की हवेलियाँ लाल पत्थर से निर्मित है। इन हवेलियों में ज्यॉमितीय शैली की नक्काशी है एवं आधार को तराश कर बेल-बूटे, फूल-पत्तियाँ आदि उकेरे गये हैं।
- इनकी सजावट में मुगल, किशनगढ़ एवं यूरोपीय चित्रशैली का प्रयोग किया गया है।

3. जोधपुर की हवेलियाँ

- जोधपुर में बड़े मियां की हवेली, पोकरण की हवेली, राखी हवेली, टोंक की सुनहरी कोठी, उदयपुर में बागौर की हवेली, जयपुर का हवामहल, नाटाणियों की हवेली, रत्नाकार पुण्डरीक की हवेली, पुरोहित प्रतापनारायण जी की हवेली, फल हवेली इत्यादि हवेली स्थापत्य के विभिन्न रूप हैं।
- राजस्थान में मध्यकाल के वैष्णव मंदिर भी हवेलियों जैसे ही बनाये गये हैं। इनमें नागौर का बंशीवाले का मंदिर, जोधपुर का रणछोड़जी का मंदिर, घनश्याम जी का मंदिर, जयपुर का कनक वृंदावन आदि प्रमुख हैं।[5,7,8]

- देशी-विदेशी पर्यटकों को लुभानें तथा राजस्थानी स्थापत्य कला को संरक्षण देने के लिए वर्तमान में अनेक हवेलियों का जीर्णोद्धार किया जा रहा है।

विचार-विमर्श

4. सीकर की हवेलियाँ

- सीकर में गौरीलाल बियाणी की हवेली, रामगढ़ (सीकर) में ताराचन्द रूइया की हवेली समकालीन भित्तिचित्रों के कारण प्रसिद्ध है।
- फतहपुर (सीकर) में नन्दलाल देवड़ा, कन्हैयालाल गोयनका की हवेलियाँ भी भित्तिचित्रों के कारण प्रसिद्ध है।
- चूरू की हवेलियों में मालजी का कमरा, रामनिवास गोयनका की हवेली, मंत्रियों की हवेली इत्यादि प्रसिद्ध है।
- खींचन (जोधपुर) में लाल पत्थरों की गोलेछा एवं टाटिया परिवारों की हवेलियाँ भी कलात्मक स्वरूप लिए हुए है।
- अन्य हवेलियाँ पंसारी की हवेली (श्रीमाधोपुर) एवं केडिया एवं राठी की हवेली (लक्ष्मणगढ़) प्रमुख है

5. चित्तौड़गढ़ की हवेलियाँ

- पत्ता तथा जैमल की हवेलियाँ: गौमुख कुण्ड तथा कालिका माता के मंदिर के मध्य जैमल पत्ता के महल हैं, जो अभी भगनावशेष के रुप में अवस्थित हैं। राठौड़ जैमल (जयमल) और सिसोदिया पत्ता चित्तौड़ की अंतिम शाका में अकबर की सेना के साथ युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये थे। महल के पूर्व में एक बड़ा तालाब है, जिसे जैमल-पत्ता का तालाब कहा जाता है। जलाशय के तट पर बौद्धों के ६ स्तूप हैं। इन स्तूपों से यह अनुमान लगाया जाता है कि प्राचीन काल में अवश्य ही यहाँ बौद्धों का कोई मंदिर रहा होगा।
- राव रणमल की हवेली: गोरा बादल की गुम्बजों से कुछ ही आगे सड़क के पश्चिम की ओर एक विशाल हवेली के खण्डहर नजर आते हैं। इसको राव रणमल की हवेली कहते हैं। राव रणमल की बहन हंसाबाई से महाराणा लाखा का विवाह हुआ। महाराणा मोकल हँसा बाई से लाखा के पुत्र थे।
- भामाशाह की हवेली: अब भग्नावस्था में मौजूद यह इमारत, एक समय मेवाड़ की आनबान के रक्षक महाराणा प्रताप को मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सब कुछ दान करने वाले प्रसिद्ध दानवीर दीवार भामाशाह की याद दिलाने वाली है। कहा जाता है कि हल्दीघाटी के युद्ध के पश्चात् महाराणा प्रताप का राजकोष खाली हो गया था व मुगलों से युद्ध के लिए बहुत बड़ी धनराशि की आवश्यकता थी। ऐसे कठिन समय में प्रधानमंत्री भामाशाह ने अपना पीढियों से संचित धन महाराणा को भेंट कर दिया। कई इतिहासकारों का मत है कि भामाशाह द्वारा दी गई राशि मालवा को लूट कर लाई गई थी, जिसे भामाशाह ने सुरक्षा की दृष्टि से कहीं गाड़ रखी थी।[9,10,11]
- आल्हा काबरा की हवेली: भामाशाह की हवेली के पास ही आल्हा काबरा की हवेली है। काबरा गौत्र के माहेश्वरी पहले महाराणा के दीवान थे।

परिणाम

राजस्थान की प्रमुख हवेलियां - स्थापत्य कला को वास्तुकला भी कहते है । वास्तु शब्द वस धातु से बना है । जिसका अर्थ है एक स्थान पर निवास करना सूक्ष्मता स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषता है ।जयपुर के नगर नियोजन में उस समय के चीनी नगरों में कैटोया के नगरी एवं बगदाद की तरह वृताकार परिमितियां तथा वर्गाकार इन दो महान सिद्घान्तो का पालन किया गया है । महान शिल्पकार विद्याधर ने जयपुर शहर को नौ वर्गों के सिद्घान्त पर बसाया हवेली निर्माण में मुख्य योगदान राजस्थान के सेठ साहूकारो का रहा है

- हवेली निर्माण कला का विकास राजस्थान में 17वीं/ 18वीं सदी में हुआ । हवेली निर्माण शैली विशुद्ध रूप से हिन्दू शैली है । राजस्थान में सर्वाधिक हवेलियों का निर्माण शेखावाटी क्षेत्र में हुआ है ।
- राजस्थान में सभी प्रमुख हवेलियां एक परम्परा में निर्मित है । इनके मुख्य भाग निम्नलिखित है हवेलियां कई मजिलों में निर्मित होती थी ।
- हवेली के मुख्य द्वार के दोनों ओर ऊँचे चबूतरों के समान स्थान बना हुआ था जहाँ बैठा जाता था उसे गवाक्ष कहते है ।[12,13,15]
- गवाक्ष के आगे का हिस्सा जहाँ परिवार रहता था पोल कहलाता था । चौक के चारों और कमरें तथा कईं हवेलियों में तीन-तीन चौक पाये जोते थे । तिबारा चौक के पास स्थित होता था ।

शेखावाटी की हवेलियाँ अपने भित्तिचित्रों के लिए विख्यात हैं। शेखावाटी की हवेलियाँ स्वर्णनगरी के रूप में विख्यात हैं।
- नवलगढ़ (झुंझुनूं) में सौ से ज्यादा हवेलियाँ अपनी शिल्प सौन्दर्य बिखेरे हुए हैं। यहाँ की हवेलियों में *रूप निवास, भगतो की हवेली, जालान की हवेली, पोद्दार की हवेली और भगेरियाँ की हवेली* प्रसिद्ध हैं।
- बिसाऊ (झुंझुनूं) में *नाथूराम पोद्दार की हवेली, सेठ जयदयाल केठिया की, हीराराम बनारसी लाल की हवेली तथा सीताराम सिंगतिया* की हवेली प्रसिद्ध है।
- झुंझुनूं में *टीबड़ेवाला की हवेली तथा ईसरदास मोदी की हवेली* अपने शिल्प वैभव के कारण अलग ही छवि लिए हुए हैं।
- मण्डावा (झुंझुनूं) में *सागरमल लाडिया, रामदेव चौखाणी तथा रामनाथ गोयनका की हवेली*, डूंडलोद (झुंझुनूं) में सेठ लालचन्द गोयनका, मुकुन्दगढ़ (झुंझुनूं) में *सेठ राधाकृष्ण एवं केसरदेव कानोड़िया* की हवेलियाँ, चिड़ावा (झुंझुनूं) में *बागड़िया की हवेली, डालमिया की हवेली*, महनसर (झुंझुनूं) की *सोने -चाँदी की हवेली*, श्रीमाधोपुर (सीकर) में *पंसारी की हवेली,* लक्ष्मणगढ़ (सीकर) *केडिया एवं राठी की हवेली* प्रसिद्ध है।
- झुंझुनूं जिले की ये ऊँची-ऊँची हवेलियाँ बलुआ पत्थर, ईंट, जिप्सम एवं चूना, काष्ठ तथा ढलवाँ धातु के समन्वय से निर्मित अपने अन्दर भित्ति चित्रों की छटा लिये हुए हैं।
- सीकर में *गौरीलाल बियाणी की हवेली*, रामगढ़ (सीकर) में *ताराचन्द रूइया* की हवेली समकालीन भित्तिचित्रों के कारण प्रसिद्ध है। फतहपुर (सीकर) में *नन्दलाल देवड़ा, कन्हैयालाल गोयनका* की हवेलियाँ भी भित्तिचित्रों के कारण प्रसिद्ध है।
- चुरू की हवेलियों में *मालजी का कमरा, रामनिवास गोयनका की हवेली, मंत्रियों की हवेली* इत्यादि प्रसिद्ध है। चुरू की सुराणा की हवेली में 1100 दरवाजे एवं खिड़कियाँ है।

भव्यता बिखेरती राजपूताने की हवेलियाँ -

खींचन (जोधपुर) में लाल पत्थरों की *गोलेछा एवं टाटिया परिवारों* की हवेलियाँ भी कलात्मक स्वरूप लिए हुए है। जोधपुर में *बड़े मियां की हवेली, पोकरण की हवेली, राखी हवेली*, टोंक की *सुनहरी कोठी*, उदयपुर में *बागौर की हवेली*, जयपुर का हवामहल, *नाटाणियों की हवेली, रत्नाकार पुण्डरीक की हवेली, पुरोहित प्रतापनारायण जी की हवेली*, कोटा में जालिम सिंह द्वारा निर्मित झालाजी की हवेली, देवता श्रीधरजी की हवेली इत्यादि राजस्थान के प्रसिद्ध हवेली स्थापत्य के विभिन्न रूप हैं।
अजमेर में पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित 'बादशाह की हवेली' है जिसे बादशाह अकबर की अनुमति उसके अमीर के निवास के लिए बनवाया गया था।
राजस्थान में मध्यकाल के वैष्णव मंदिर भी हवेलियों
जैसे ही बनाये गये हैं। इनमें नागौर का बंशीवाले का मंदिर, जोधपुर का रणछोड़जी का मंदिर, घनश्याम जी का मंदिर, जय पुर का कनक वृंदावन आदि प्रमुख हैं। देशी-विदेशी पर्यटकों को लुभानें तथा राजस्थानी स्थापत्य कला को सरंक्षण देने के लिए वर्तमान में अनेक हवेलियों का जीर्णोद्धार किया जा रहा है।[15,17]

निष्कर्ष

राजस्थान में बड़े-बड़े सेठ साहूकारों तथा धनी
व्यक्तियों ने अपने निवास के लिये विशाल हवेलियों का निर्माण करवाया। ये हवेलियाँ कई मंजिला होती थी।
शेखावाटी, ढूँढाड़, मारवाड़ तथा मेवाड़ क्षेत्रों की हवेलियाँ स्थापत्य की दृष्टि से भिन्नता लिए हुए हैं। शेखावाटी क्षेत्र की हवेलियाँ अधिक भव्य, आकर्षक एवं कलात्मक है। जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, तथा शेखावाटी के रामगढ़, मण्डावा, पिलानी, सरदारशहर, रतनगढ़, नवलगढ़, फतहपुर, मुकुंदगढ़, झुंझुनूं, महनसर, चुरू आदि कस्बों में खड़ी विशाल हवेलियाँ आज भी अपने स्थापत्य का
उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। राजस्थान की हवेलियाँ अपने छज्जों, बरामदों और झरोखों पर बारीक व उम्दा नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं।[18,19]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. Rajasthan, by Monique Choy, Sarina Singh. Lonely Planet, 2002. ISBN 1740593634.
2. ↑ In Rajasthan, by Royina Grewal. Lonely Planet Publications, 1997. ISBN 0-86442-457-4.
3. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 16 नवंबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 नवंबर 2015.

4. PTI (1 September 2019). "Kalraj Mishra is new governor of Rajasthan, Arif Mohd Khan gets Kerala | India News - Times of India". The Times of India (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 1 September 2019.
5. ↑ "Rajasthan Profile" (PDF). Census of India. मूल से 16 September 2016 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 21 July 2016.
6. ↑ "MOSPI Net State Domestic Product, Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India". अभिगमन तिथि 7 April 2020.
7. ↑ "Report of the Commissioner for linguistic minorities: 52nd report (July 2014 to June 2015)" (PDF). Commissioner for Linguistic Minorities, Ministry of Minority Affairs, Government of India. पपृ॰ 34–35. मूल (PDF) से 28 दिसंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 16 फ़रवरी 2016.
8. ↑ "Sub-national HDI – Area Database – Global Data Lab". hdi.globaldatalab.org (अंग्रेज़ी में). मूल से 23 September 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 September 2018.
9. ↑ "Census 2011 (Final Data) – Demographic details, Literate Population (Total, Rural & Urban)" (PDF). planningcommission.gov.in. Planning Commission, Government of India. मूल से 27 January 2018 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 3 October 2018.
10. ↑ सक्सेना, हरमोहन (2014). राजस्थान अध्ययन. जयपुर: राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल जयपुर. पृ॰ 3.
11. ↑ Jat, Madan; Jat (2018). Madan. Jat.
12. ↑ rajasthan gk quiz http://www.rajasthangkquiz.com/mukundara-hills-national-park/. गायब अथवा खाली |title= (मदद)
13. ↑ Bureau, The Hindu (2022-03-17). "Ahead of Assembly polls, Gehlot announces formation of 19 new districts in Rajasthan". The Hindu (अंग्रेज़ी में). आइ॰एस॰एस॰एन॰ 0971-751X. मूल से 17 March 2022 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2022-03-17.
14. ↑ Kohli, Anju; Shah, Farida; Chowdhary, A. P. (1997). Sustainable Development in Tribal and Backward Areas (अंग्रेज़ी में). Indus Publishing. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-7387-072-9.
15. ↑ गोपीनाथ शर्मा / 'Social Life in Medivial Rajasthan' / पृष्ठ ३
16. ↑ शर्मा, गोपीनाथ (1971). राजस्थान का इतिहास. आगरा: शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी. पृ॰ 7.
17. ↑ http://hindi.mapsofindia.com/rajasthan/jaipur/places-of-interest/ Archived 2016-09-19 at the Wayback Machine जयपुर के दर्शनीय स्थल
18. ↑ [1]बेरोजगार सेवा केन्द्र सीकर
19. ↑ rajasthan gk quiz http://www.rajasthangkquiz.com/mukundara-hills-national-park/. गायब अथवा खाली |title= (मदद)

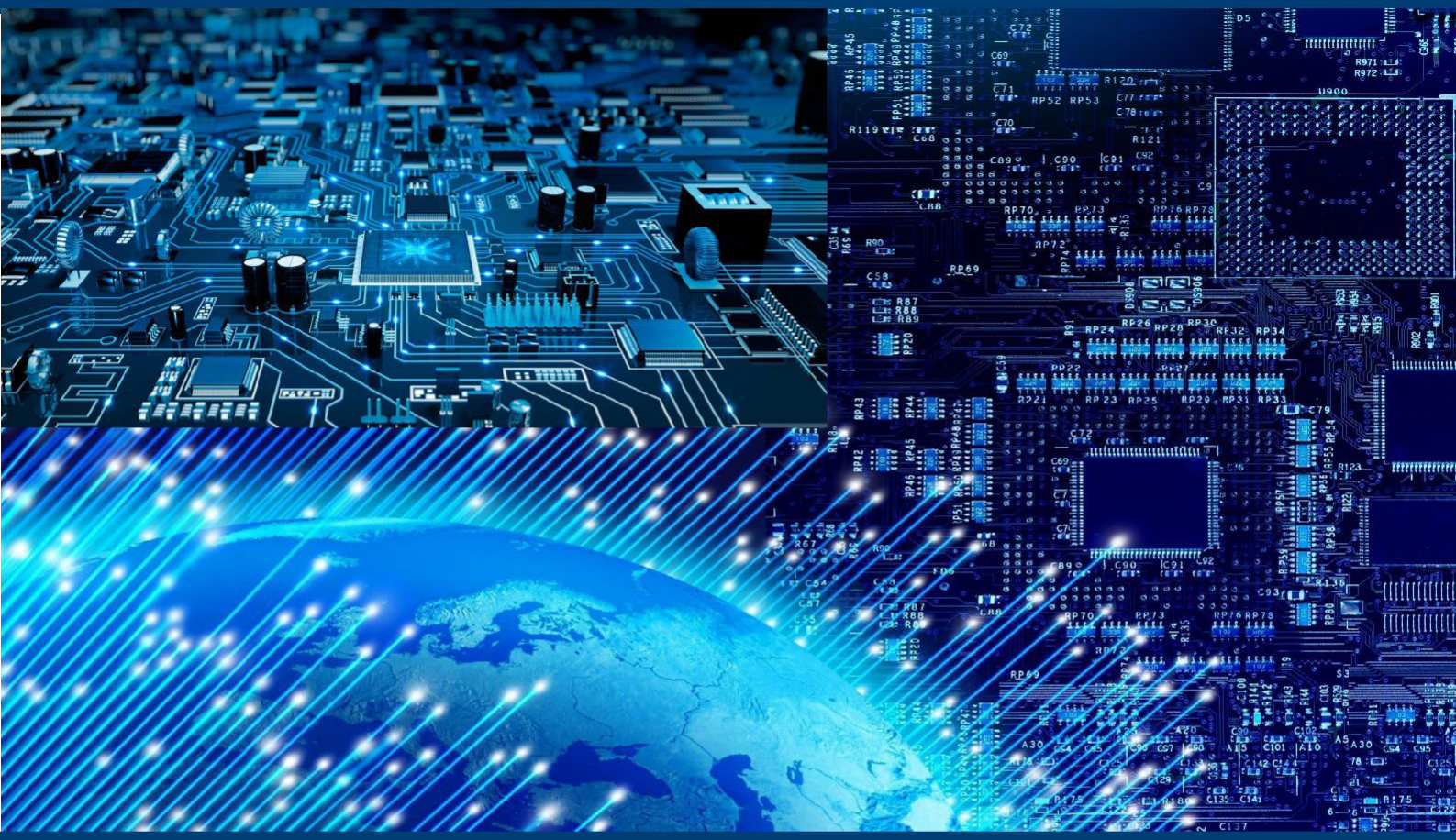

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |